Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

Unit–2 :
नए राष्ट्रों का उदय (Rise of New Nations)

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी का यूरोप राजनीतिक, सामाजिक और वैचारिक परिवर्तनों का युग था। फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने न केवल फ्रांस बल्कि सम्पूर्ण यूरोप में राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र की भावना को जन्म दिया। नेपोलियन के अभियानों ने यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना को तीव्र किया। इसी पृष्ठभूमि में जर्मनी और इटली जैसे राष्ट्रों का एकीकरण हुआ। वहीं रूस जैसे विशाल बहु-राष्ट्रीय साम्राज्य में विभिन्न जातीय और राष्ट्रीय समूहों की समस्याएँ गहराती चली गईं। इस यूनिट का उद्देश्य नए राष्ट्रों के उदय की प्रक्रिया, उनके नेताओं की भूमिका तथा रूस में पूर्वी राष्ट्रीयताओं की जटिल समस्याओं का विस्तृत अध्ययन करना है।

यह यूनिट न केवल राजनीतिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि किस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना ने यूरोप की शक्ति-संरचना और अंतरराष्ट्रीय राजनीति को स्थायी रूप से प्रभावित किया। उन्नीसवीं शताब्दी का यूरोप राष्ट्रीयता (Nationalism) के विचार से गहराई से प्रभावित रहा। फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के सिद्धांतों के माध्यम से यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। इसी चेतना के परिणामस्वरूप जर्मनी और इटली जैसे बिखरे हुए राज्यों का एकीकरण संभव हुआ। साथ ही रूस जैसे बहु-राष्ट्रीय साम्राज्य को पूर्वी राष्ट्रीयताओं की जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ा। यह यूनिट इन्हीं ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण करती है।

1. जर्मनी का एकीकरण : बिस्मार्क के नेतृत्व में

एकीकरण से पूर्व जर्मनी की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति

नेपोलियन युद्धों से पूर्व जर्मनी लगभग 300 छोटे-बड़े राज्यों में विभाजित था, जिनमें राजशाही, डची और स्वतंत्र नगर-राज्य शामिल थे। 1815 की वियना कांग्रेस के बाद इनकी संख्या घटकर 39 रह गई, जिन्हें 'जर्मन महासंघ' कहा गया। यह महासंघ वास्तविक एकता प्रदान करने में असफल रहा क्योंकि इसके पास न तो कोई केन्द्रीय शासन था और न ही प्रभावी सेना।

आर्थिक दृष्टि से जर्मनी पिछड़ा हुआ था, किंतु 1834 में स्थापित 'जोलफेराइन' (Zollverein) नामक सीमा शुल्क संघ ने आर्थिक एकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे व्यापार बढ़ा, उद्योगों का विकास हुआ और राष्ट्रीय भावना को बल मिला।

(क) एकीकरण से पूर्व जर्मनी की स्थिति

नेपोलियन युद्धों से पूर्व जर्मनी लगभग 300 छोटे-बड़े राज्यों में विभाजित था। 1815 की वियना कांग्रेस के बाद इनकी संख्या घटकर 39 रह गई, जिन्हें 'जर्मन महासंघ' (German Confederation) कहा गया। ऑस्ट्रिया और प्रशा इस महासंघ के प्रमुख राज्य थे, किंतु आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण एकीकरण की प्रक्रिया बाधित रही।

(ख) प्रशा का उदय और बिस्मार्क का व्यक्तित्व प्रशा जर्मनी का सबसे शक्तिशाली राज्य था। इसकी सेना अनुशासित, आधुनिक और संगठित थी। 1862 में ओटो फॉन बिस्मार्क को प्रशा का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। बिस्मार्क एक कट्टर राष्ट्रवादी, राजतंत्र का समर्थक और यथार्थवादी राजनीतिज्ञ था।

उसका प्रसिद्ध कथन — "जर्मनी के महान प्रश्न भाषणों और प्रस्तावों से नहीं, बल्कि रक्त और लौह से सुलझाए जाएँगे" — उसकी नीति को स्पष्ट करता है। बिस्मार्क ने उदारवादियों और राष्ट्रवादियों दोनों की भावनाओं का प्रयोग अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया। ओटो फॉन बिस्मार्क (1815–1898) प्रशा का प्रधानमंत्री था। वह कट्टर राष्ट्रवादी, यथार्थवादी (Realpolitik) और सशक्त नेतृत्वकर्ता था। उसका प्रसिद्ध कथन — "जर्मनी का एकीकरण भाषणों और प्रस्तावों से नहीं, बल्कि रक्त और लौह (Blood and Iron) से होगा" — उसकी नीति को स्पष्ट करता है।

(ग) जर्मनी के एकीकरण की प्रमुख नीतियाँ

1. सैन्य सुधार – प्रशा की सेना को शक्तिशाली बनाया गया।

2. कूटनीति – बिस्मार्क ने यूरोपीय शक्तियों को अलग-थलग कर युद्ध लड़े।

3. युद्धों की श्रृंखला –

डेनमार्क युद्ध (1864) – श्लेसविग-होल्सटीन पर अधिकार

ऑस्ट्रो-प्रशा युद्ध (1866) – ऑस्ट्रिया की पराजय, उत्तरी जर्मन महासंघ की स्थापना।

फ्रैंको-प्रशा युद्ध (1870–71) – फ्रांस की पराजय, राष्ट्रीय भावना का चरमोत्कर्ष।

(घ) जर्मन साम्राज्य की स्थापना

18 जनवरी 1871 को वर्साय के राजमहल में विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। इस प्रकार जर्मनी एक शक्तिशाली राष्ट्र-राज्य के रूप में उभरा।

(ङ) ऐतिहासिक महत्व

यूरोप की शक्ति-संतुलन व्यवस्था में परिवर्तन।
जर्मनी का औद्योगिक और सैन्य शक्ति के रूप में उदय।
भविष्य के यूरोपीय संघर्षों की नींव।